गोस्वामी तुलसीदास कृत 'हनुमान चालीसा' में काव्य-सौन्दर्य

शोधार्थी :- क्षेमेन्द्र भारद्वाज

गोस्वामी तुलसीदास की कृति 'हनुमान चालीसा' अपने चालीसा काव्य परंपरा में एक सुंदर और सजीव रचना है | इस रचना के माध्यम से कवि ने अनेक कविता के तत्वों को प्रदर्शित किया है | यह रचना विशेषत: दोहा और चौपाईयों का संग्रह है, जिसका पाठ सम्पूर्ण भारत में लगभग हुआ करता है |

इस चालीसा का पाठ तो कहीं-कहीं 'एक सौ एक एवं एक सौ इकावन' हुआ करता है, जिसका धार्मिक महत्त्व बताया गया है | प्रस्तुत 'हनुमान चालीसा' में कवि ने अत्यंत सुंदर शब्दावली का प्रयोग करते हुए काव्य की सुंदर सर्जना की है | इस चालीसा का आरम्भ का छंद दोहा है | जिसे इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है |

"श्री गुरु सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि |
बरनउ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ||" [1]

इसका प्रचलित अर्थ यह है कि "श्री गुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रुपी दर्पण को पवित्र करकर श्री रघुबर के निर्मल यश को वर्णन करता हूँ | जो चारों फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) देने वाला है" [2] |

इस प्रकार 'हनुमान चालीसा' के अनेक प्रकाशनों में 'हनुमान चालीसा' का आरम्भ 'श्री गुरु चरण सरोज रज' से ही माना है लेकिन तथ्य यह है कि यह 'हनुमान चालीसा है | इसके प्रथम छद में हनुमान का नाम होना चाहिए लेकिन इसमें ऐसा नहीं है | प्रत्युत हनुमान का नाम चौपाई के आरम्भ से प्राप्त होता है |

इस चालीसा का आरम्भ (श्री) शब्द से है | प्रस्तुत हनुमान चालीसा के प्रथम दोहा छद में कवि ने आरंभिक (श्री) शब्द से

मंगलाचरण के विधानों से सुशोभित किया है | जिस प्रकार पूर्व के काव्यकारों में देखने को मिलता है | 'श्री' शब्द लक्ष्मी वाचक शब्द है |

इस चालीसा में प्रथम छंद में श्री शब्द आने से चालीसा काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि हुआ है | प्रत्युत गोस्वामी तुलसीदास का 'हनुमान चालीसा' अन्य चालीसा ग्रंथों से इस प्रकार भिन्न होता है क्योंकि इसके आरंभिक शब्द में एक गूढ़ अर्थ निहित है | गोस्वामी तुलसीदास भारतीय काव्य शास्त्रीय परंपरा को समन्वय कर अपने 'हनुमान चालीसा' नामक काव्य में स्पष्ट कर दिया है | क्योंकि श्री शब्द का प्रयोग संस्कृत के कवियों के यहाँ देखने को मिलता है | अन्य हिंदी-कवियों की कविताओं में नहीं के बराबर ही दीखता है |

यहाँ तक कि संस्कृत के अनेक महाकाव्यों का आरम्भ श्री शब्द से ही होता है, जैसे 'किरातार्जुनियम' का प्रथम सर्ग का प्रथम श्लोक है |

श्रीय: कुरूणामधिपस्य पालनी |

इस प्रकार 'शिशुपालवघम' के प्रथम श्लोक में इस प्रकार श्री शब्द आया है |

श्रीय: पति: श्रीमति शासिन्तु जगत |

इत्यादि संस्कृत काव्य परंपरा में श्री का प्रचलन ही कहा जा सकता है, जो 'हनुमान चालीसा' नामक काव्य में संस्कृत से आया हो | इस प्रकार अनेक तथ्यों को देखे जा सकते हैं, जो संस्कृत से हिंदी में आ गये हों |

'हनुमान चालीसा' का काव्य सौन्दर्य इस लिए भी सुंदर लगता है क्योंकि इसमें चौपाईयों की शब्दावली सहज ही है |

"जय हुमां ज्ञान गुण सागर
जय कपीस तिहु लोक उजागर" [3] |

इसका प्रचलित अर्थ यह है कि "श्री हनुमान जी आपकी जय हो | आपका ज्ञान और गुण अथाह है | हे कपीश्वर ! आपकी जय हो !

तीनों लोकों में (स्वर्ग, पाताल, भू-लोक में आपकी कीर्ति है" [4] |

प्रस्तुत चौपाई से यह स्पष्ट होता है कि गोस्वामी जी ने सहज शब्दावली का प्रयोग इस चालीसा में किया है |

यदि तुकबंदी की दृष्टि से गोस्वामी जी के 'हनुमान चालीसा' ग्रन्थ को देखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि इनके काव्य में अनायास ही तुकबंदी आ जाया करते हैं |

हम पूर्व के चौपाईयों के तुकबंदियों को देख सकते है जैसे प्रथम पंक्ति में 'सागर' है तो दिव्तीय में 'उजागर' |

इतना ही नहीं प्रत्युत गोस्वामी जी ने अलंकारिक भाषा का प्रयोग करके 'हनुमान चालीसा' नामक काव्य को सुंदर किया है | इसका उदाहरण प्रस्तुत है |

"कानन कुंडल कुंचित केसा" [5] |

इस चौपाई में 'क' की आवृति बार-बार हुई है | एक अन्य भी उदाहरण देख जा सकता है |

"कबि कोबिद कहि सके कहा ते" [6] |

इसमें 'क' का बार-बार आवृति देखने को मिलता है | एक अन्य भी उदाहरण देखा जा सकता है |

"प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहि" [7] |

इस पंक्ति में म की आवृति हुई है |

इस प्रकार के अनेक उदाहरण 'हनुमान चालीसा' नामक काव्य में देखा जा सकता है |

उपर्युक्त चौपाइयों में क और म की आवृति ने तो काव्य की सौन्दर्य वृद्धि की है | इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी ने अपने काव्य में अलंकार के माध्यम से काव्य की शोभा ही बढ़ाया है |

कविता में सौन्दर्य बढाने में कविता के अनेक तत्वों की उपस्थिति अनिवार्य है | जैसे शब्द, अर्थ, रस, छंद, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि इत्यादि | यह उचित ही कहा गया है कि "रस के बिना काव्य उच्च कोटि का नहीं मन जाता है | इसी से रस को काव्य की आत्मा कहा गया है | जिस प्रकार वीरता, उदारता, त्याग आदि गुण शरीर में चितस्वरूप से विद्यमान आत्मा से अलग नहीं होते और उसका उत्कर्ष प्रकट करते हैं, उसी प्रकार माधुर्य ओज और प्रसाद गुण काव्य के आत्मा के सामान विराजमान आनंदरूप रस से अलग नहीं है और उसका उत्कर्ष सिद्ध करते है" |

इस प्रकार 'हनुमान चालीसा' नामक काव्य गोस्वामी तुलसीदास ने ओजगुण, माधुर्य गुण एवं प्रसाद गुणों का मिश्रित प्रयोग किया है | अत: यह कहा जा सकता है कि रस, छंद, अलंकार एवं कविता के अन्य सहायक तत्वों से 'हनुमान चालीसा' में काव्य सौन्दर्य अपने चरम पर उपलब्द है |

संदर्भ :-

1.श्री हनुमान चालीसा (गुटका) गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर (उ.प्र), पचपनवा पुनर्मुद्रण, पृ. 1 |

2.श्री हनुमान चालीसा (मूढ़ भाव प्रदीपिका), श्री खापदिया बाबा सदाचार सन्देश प्रकाशन, बलिया, (उ.प्र), पृ. 11 |

3.श्री हनुमान चालीसा (गुटका), गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर, (उ.प्र), पचपनवा पुनर्मुद्रण, पृ.3 |

4.श्री हनुमान चालीसा (गूढ़ भाव प्रदीपिका), श्री खपाईया बाबा सदाचार सन्देश प्रकाशन बलिया, (उ.प्र), पृ. 17 |

5.श्री हनुमान चालीसा (गुटका), गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर (उ.प्र), पचपनवा पुनर्मुद्रण, पृ. 4 |

6.वही. पृ. 7 |

7.वही. पृ. 8 |

8.काव्य प्रदीप, राम बहोरी शुक्ल, हिंदी भवन प्रकाशन इलाहाबाद, उ.प्र. (31वां) संस्करण, पृ. 116 |